भारत शिक्षण संस्था द्वारा संचलित,

श्री.छत्रपती शिवाजी महाविद्यालय,उमरगा

जिला-उस्मानाबाद

हिंदी विभाग

प्रस्तुत कर्ता :- डॉ.एस.एन.मुच्छटे,

(हिंदी विभागाध्यक्ष)

कक्षा :- B.A.II / B.Sc.II द्वितीय भाषा

प्रश्नपत्र का नाम तथा क्र.- सामान्य हिंदी ३ और ४

भाषा कौशल

- भाषा शिक्षण वस्तुतः भाषायी कौशलों का शिक्षण।
- भाषा कौशल से तात्पर्य - भाषा प्रयोक्ता द्वारा प्रयोग या व्यवहार में प्राप्त योग्यता या भाषा प्रयोग की कुशलता।
- रुपात्मक और प्रकार्यात्मक आधार पर भाषा कौशल चार।
- १) श्रवण कौशल, २) भाषण कौशल, ३) वाचन कौशल, ४) लेखन कौशल।
- श्रवण और भाषण कौशल – प्रधान कौशल।
- वाचन और लेखन कौशल – गौण कौशल।

(१) श्रवण कौशल अर्थात सुनने की क्रिया।

- ध्यानपूर्वक सुनना, सुनी गयी बात पर चिंतन-मनन।
- चिंतन-मनन के पश्चात् अपना मन्तव्य स्थिर करना।
- तद्नुसार आचरण या व्यवहार करना।
- प्रायः बालक मातृभाषा का अभिगम श्रवण द्वारा।
- विधिवत् शिक्षा में श्रवण कौशल के विकास पर बल।
- श्रवण कुशलता का विकास भाषण कौशल के विकास में सहाय्यक।

- श्रवण प्रक्रिया के तीन स्तर - सहज अभिज्ञान,अवधारण, अर्थ ग्रहण।
- श्रवण कौशल के विकास के लिए अभ्यास और अनुभव की आवश्यकता।
- श्रवण के बिना भाषण संभव नहीं ।
- श्रवण कौशल के लिए क्रमशः ध्वनियों का श्रवण।
- श्रवण कौशल के विकास के लिए छात्र के इर्द-गिर्द भाषायी माहौल।

(२) भाषण कौशल अर्थात भावों तथा विचारों को स्पष्ट एवं प्रभावी रुप से अभिव्यक्त करना।

- यह भाषा पर अधिकार कराने का प्रमुख साधन।
- भाषण कौशल द्वारा मनुष्य आधारभूत आवश्यकताओं की पूर्ति।
- भाषण कौशल का विकास श्रवण कौशल पर।
- भाषण कौशल के मुख्य दो अंग –

  १) उच्चारण, २) मौखिक अभिव्यक्ति।

- उच्चारण शिक्षा में बलाघात, विवृत्ति कुशलता, अनुतान पर ध्यान।
- मौखिक अभिव्यक्ति के लिए उपरोक्त तत्त्व पृष्ठभूमि निर्माण करते हैं।
- मौखिक अभिव्यक्ति के तीन घटक।
- शाब्दी संरचना,आर्थी संरचना तथा व्याकरणिक संरचना।
- मौखिक अभिव्यक्ति के अर्थग्रहण की कुशलता आवश्यक।
- इसके के लिए सदैव अभ्यास अत्यावश्यक।

(३) वाचन कौशल अर्थात भाव-ग्रहण का महत्त्वपूर्ण साधन।

- ‘वाचन’ का अर्थ - पढने की क्रिया।
- भाषा शिक्षण प्रक्रिया में ‘वाचन’ का अर्थ भिन्न।
- यहाँ वाचन का अर्थ - सार्थक ध्वनियों के प्रतीक शब्दों को पढकर उसका अर्थ ग्रहण करना।
- उसके पश्चात् उस पर अपना मन्तव्य स्थिर करना।
- फिर तद्नुसार व्यवहार करना।
- ‘वाचन’ मस्तिष्क का उच्चस्तरीय व्यापार।

- ‘वाचन’ की दो प्रक्रिया - १) लिपि प्रतीकों की पहचान,
  २) भाव तथा अर्थ ग्रहण।
- वाचन कौशल से समूचे भाषा पर अधिकार।
- वाचन कौशल से ज्ञानार्जन।
- वाचन कौशल से कला-साहित्य का रसास्वादन।
- वाचन कौशल के विकास हेतु द्रुत वाचन अभ्यास आवश्यक।
- वाचन कौशल के लिए साहित्य वाचन अत्यावश्यक।

(४) लेखन कौशल अर्थात सामान्य अर्थ सामान्य अक्षर विन्यास से लेकर रचनात्मक लेखन तक।

- भाषायी कौशल में लेखन कौशल जटिलतम कौशल।
- लेखन-मानव जाति के विचारों का अमर अभिलेख।
- लेखन कौशल से वैचारिक परंपरा का विकास।
- लेखन कौशल का भाषा कौशल में अर्थ है - भाषा विशेष में स्वीकृत लिपि-प्रतीकों के माध्यम से विचारों तथा भावों को अंकित करने की कुशलता।

- लेखन कौशल के तीन स्तर – १) वर्ण रचना,
  २) वर्तनी,
  ३) रचना।
- वर्ण रचना से तात्पर्य छात्रों को वर्णिया की बनावट सिखाना।
- लेखन कौशल के लिए वर्णों का विधिवत् अभ्यास आवश्यक।
- लेखन कौशल में रचना से तात्पर्य- विचारों की क्रमबध्द लिखित अभिव्यक्ति।

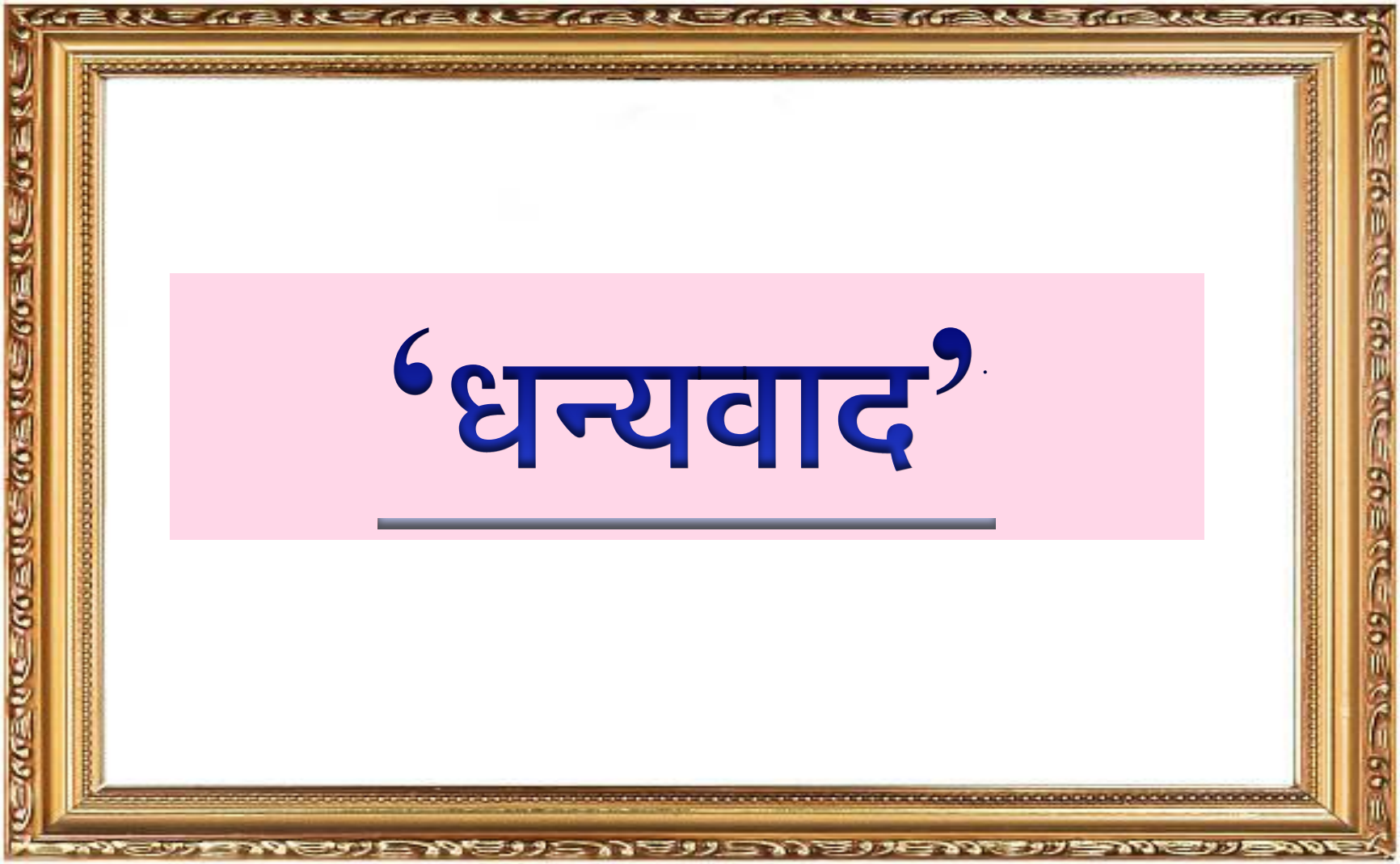

‘धन्यवाद’